श्री हरिविष्णु अवस्थी
टीकमगढ़ द्वारा
प्रदत्त पुस्तकें/पत्रिकायें

ईशादि नौ उपनिषद्

[ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय और श्वेताश्वतर—उपनिषद्]

[मन्त्र, अन्वय, हिंदीमें अन्वयार्थ, प्रत्येक मन्त्रकी सरल हिंदी-व्याख्या, मन्त्रोंकी वर्णानुक्रमणिका तथा विषय-सूचीसहित]

व्याख्याकार—

हरिकृष्णदास गोयन्दका

प्रकाशक—गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०१० से २०४३ तक १,००,०००
सं० २०४७ बारहवाँ संस्करण १०,०००
कुल १,१०,०००

मूल्य— दस रुपये 12/-

मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर

मिलनेका पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस, (गोरखपुर)

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

(१) ईशावास्योपनिषद्

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
	उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ...	२५
१–२	सर्वव्यापक परमेश्वरका निरन्तर स्मरण करते हुए निष्कामभावपूर्वक कर्म करनेका विधान	२६
३	उपर्युक्त मार्गके विपरीत चलनेवालोंकी दुर्गतिका कथन ...	२७
४–५	उपास्यदेव परब्रह्म परमेश्वरके स्वरूपका प्रतिपादन ...	२८
६–८	परब्रह्म पुरुषोत्तमको जाननेवाले महापुरुषकी स्थिति तथा तत्त्वज्ञानके फलका निरूपण	२९
९–११	विद्या और अविद्याकी उपासनाके तत्त्वका निरूपण ...	३१
१२–१४	सम्भूति और असम्भूतिकी उपासनाके तत्त्वका निरूपण ...	३४
१५–१६	भक्तके लिये अन्तकालमें परमेश्वरकी प्रार्थना ...	३७
१७	शरीरत्यागके समय प्रार्थना	३८
१८	परमधाम जाते समय अर्चिमार्गके अग्नि-अभिमानी देवतासे प्रार्थना	३९
	शान्तिपाठ	४०

(२) केनोपनिषद्

	उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ...	४१

प्रथम खण्ड

१	इन्द्रियादिकोंका प्रेरक कौन है—इस विषयमें शिष्यका प्रश्न ...	४२
२–८	उत्तरमें गुरुद्वारा इन्द्रियादिकोंको सत्ता-स्फूर्ति देनेवाले सर्वप्रेरक परब्रह्म परमात्माका निरूपण एवं संकेतसे उसकी अनिर्वचनीयताका प्रतिपादन	४२

द्वितीय खण्ड

१	'जीवात्मा परमात्माका अंश है और सम्पूर्ण इन्द्रियादिमें जो शक्ति है, वह भी ब्रह्मकी ही है—' इतना जान लेना ही पूर्णज्ञान नहीं है—यह कहकर गुरुका ब्रह्मज्ञानकी विलक्षणताविषयक संकेत करना	४७
२	शिष्यद्वारा विलक्षणतापूर्वक अपनी अनुभूतिका वर्णन ...	४८
३–४	गुरु-शिष्य-संवादका निष्कर्ष	४८

Scanned with OKEN Scanner

मन्त्र विषय पृष्ठ

५ ब्रह्म-तत्त्वको इसी जन्ममें जान लेनेकी अत्यावश्यकताका प्रतिपादन ४९

तृतीय खण्ड

१–२ परब्रह्म परमात्माकी महिमा न जाननेके कारण देवताओंका अभिमान और उसके नाशके लिये यक्षका प्रादुर्भाव ... ५१

३–६ यक्षको जाननेके लिये अग्निदेवका प्रयत्न और यक्षके द्वारा अग्निदेवके अभिमानका नाश ५२

७–१० यक्षको जाननेके लिये वायुदेवका प्रयत्न और यक्षके द्वारा वायुदेवके अभिमानका नाश ५४

११ यक्षको जाननेके लिये इन्द्रदेवका प्रयत्न, यक्षका अन्तर्धान होना तथा उमादेवीका प्राकट्य और उनसे इन्द्रका प्रश्न ... ५६

चतुर्थ खण्ड

१–३ उमादेवीद्वारा यक्षरूपमें प्रकट परब्रह्मके तत्त्वका उपदेश, उपदेश पाकर इन्द्रको ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति तथा अग्नि, वायु और इन्द्रकी श्रेष्ठता एवं उनमें भी इन्द्रकी सर्वश्रेष्ठताका निरूपण ... ५७

४ आधिदैविक दृष्टान्तसे ब्रह्मज्ञानकी पूर्वावस्थाके विषयमें सांकेतिक आदेश और उसका महत्त्व ५९

५ उसी प्रकार आध्यात्मिक दृष्टान्तसे ब्रह्मज्ञानकी पूर्वावस्थाके विषयमें सांकेतिक आदेश और निरन्तर प्रेमपूर्वक उसका स्मरण होनेका कथन ६०

६ परब्रह्मकी उपासनाका प्रकार और फल ६०

७ उपसंहार ६१

८–९ ब्रह्मविद्याके साधनोंका वर्णन तथा ब्रह्मविद्याका रहस्य जाननेकी महिमा ६२

शान्तिपाठ ६३

(३) कठोपनिषद्

उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ... ६४

प्रथम अध्याय

(प्रथम वल्ली)

१–४ महर्षि उद्दालकके द्वारा यज्ञ करनेके अनन्तर दक्षिणाके रूपमें गोधन देते समय नचिकेतामें आस्तिकताका आवेश और पिता पुत्र-संवाद ६४

५–६ नचिकेताका धैर्यपूर्ण विचारपूर्वक पिताको आश्वासन देना ... ६७

७–८ नचिकेताका यमलोक जाना और यमराजपत्नीद्वारा यमराजसे आतिथ्य-सत्कारके लिये प्रार्थना ६८

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
१	यमराजद्वारा नचिकेताका सत्कार और तीन वर माँगनेके लिये कहना	७०
१०-११	नचिकेताद्वारा प्रथम वरमें पितृ-परितोषकी याचना और यमराजद्वारा उक्त वर-प्रदान ...	७०
१२-१३	नचिकेताद्वारा द्वितीय वरमें स्वर्गकी साधनभूत अग्निविद्याकी याचना	७१
१४-१९	यमराजद्वारा फलसहित 'नाचिकेत' अग्निविद्याका वर्णन ...	७२
२०-२२	नचिकेताद्वारा तृतीय वरमें आत्मज्ञानके लिये याचना और यमराजद्वारा आत्माके तत्त्वज्ञानकी कठिनताका प्रतिपादन तथा नचिकेताकी दृढ़ताका वर्णन	७६
२३-२५	यमराजका नचिकेताको आत्मतत्त्वविषयक प्रश्नके बदलेमें भाँति-भाँतिके प्रलोभन देना	७८
२६-२९	नचिकेताकी परम वैराग्यपूर्ण उक्ति तथा आत्मतत्त्व जाननेका अटल निश्चय	८०

(द्वितीय वल्ली)

१-२	यमराजद्वारा ब्रह्मविद्याके उपदेशका आरम्भ और श्रेय-प्रेयका विवेचन	८३
३-६	आत्मविद्याभिलाषी नचिकेताके वैराग्यकी प्रशंसा तथा अविद्यामें रचे-पचे मनुष्योंकी दुर्दशाका कथन ...	८५
७-९	आत्मतत्त्वको जाननेवालोंकी महिमा तथा तत्त्वज्ञानीकी दुर्लभताका वर्णन और नचिकेताकी प्रशंसा	८८
१०-११	यमराजद्वारा अपने उदाहरणसे निष्कामभावकी महिमाका वर्णन एवं नचिकेताकी निष्कामताका वर्णन	९०
१२-१३	परब्रह्म परमात्माकी महिमा	९२
१४	नचिकेताका सर्वातीत तत्त्वविषयक प्रश्न	९३
१५-१७	यमराजद्वारा ॐकारोपदेश, नाम-नामीका अभेद-निरूपण और नामकी महिमा	९४
१८-१९	आत्माके स्वरूपका वर्णन ...	९५
२०-२१	परमात्माके स्वरूपका वर्णन ...	९७
२२	परमेश्वरकी महिमा समझनेवाले पुरुषकी पहिचान ...	९८
२३	कृपानिर्भर साधकको परमेश्वरकी प्राप्तिका निरूपण ...	९९
२४-२५	परमात्मा किसको और क्यों नहीं मिलते ? इसका कथन ...	१००

(तृतीय वल्ली)

१	जीवात्मा और परमात्माका नित्य सम्बन्ध और प्राणियोंकी हृदय-गुफामें दोनोंके निवास-स्थानका निरूपण ...	१०१
२	प्रार्थनाको परमात्माकी प्राप्तिका सर्वोत्तम साधन बतलाना ...	१०२

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
१–४	रथ और रथीके रूपकसे परमात्मप्राप्तिके उपायका कथन ...	१०३
५–९	विवेकहीनकी विवशता तथा दुर्गति और विवेकशीलकी स्वाधीनता तथा परमगतिका प्रतिपादन	१०४
१०–११	इन्द्रियोंको असत् मार्गसे रोककर भगवान्‌की ओर लगानेके प्रकारका तात्त्विक विवेचन	१०७
१२–१३	परमात्माकी प्राप्तिके महत्त्व और साधनका निरूपण ...	१०९
१४–१५	परमात्माकी प्राप्तिके लिये मनुष्योंको चेतावनी, परमात्माके स्वरूपका और उसके जाननेके फलका वर्णन ...	११०
१६–१७	उपर्युक्त उपदेशमय आख्यानके श्रवण और वर्णनका फलसहित माहात्म्य	११२

(द्वितीय अध्याय)

(प्रथम वल्ली)

१	परमेश्वरके दर्शनमें इन्द्रियोंकी बहिर्मुखता ही विघ्न है ...	११३
२	अविवेकी और विवेकियोंका अन्तर	११४
३–५	जिनकी कृपाशक्तिसे इन्द्रियाँ और अन्तःकरण अपना-अपना कार्य करते हैं, उन सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् परमेश्वरके ज्ञानसे शोक-निन्दा आदि सब दोषोंकी निवृत्तिका कथन ...	११४
६–९	जगत्‌के कारणरूप परब्रह्मका अदितिदेवी, अग्नि और सूर्यके रूपमें वर्णन	११६
१०–११	परमात्माकी सर्वव्यापकता और सर्वरूपताको न जाननेके कारण जो इसे नाना रूपोंमें देखते हैं, उनको बारंबार जन्म-मरणकी प्राप्ति होनेका कथन	११८
१२–१५	हृदय-गुफामें स्थित परमेश्वरको अङ्गुष्ठपरिमाणवाला बताना और उस परमेश्वरके न जानने और जाननेके फलका वर्णन ...	११९

(द्वितीय वल्ली)

१	परमेश्वरके ध्यानसे शोक-निवृत्ति तथा जीवन्मुक्ति और विदेह-मुक्तिका निरूपण	१२२
२–४	परमेश्वरकी सर्वरूपता और सर्वत्र परिपूर्णताका प्रतिपादन ...	१२३
५–६	यमराजद्वारा परमात्माका स्वरूप और जीवात्माकी गति बतानेकी प्रतिज्ञा	१२४
७	जीवात्माकी गतिका प्रकरण	१२५
८–११	परमेश्वरके स्वरूपका वर्णन तथा अग्नि, वायु और सूर्यके दृष्टान्तसे परमेश्वरकी व्यापकता और निर्लेपताका कथन ...	१२६

मन्त्र विषय पृष्ठ

१२-१३ समस्त प्राणियोंके अन्तर्यामी सर्वशक्तिमान् परमेश्वरका अपने हृदयमें दर्शन करनेवालेको परमानन्द और परम शान्तिकी प्राप्तिका निरूपण १२८

१४ उक्त परमानन्दकी प्राप्ति किस प्रकार होती है—यह जाननेके लिये नचिकेताकी उत्कण्ठा १३०

१५ यमराजद्वारा परब्रह्मकी सर्वप्रकाशकताका प्रतिपादन ... १३०

(तृतीय वल्ली)

१ संसाररूप अश्वत्थ-वृक्षका वर्णन १३१

२ सबका शासन करनेवाले परमेश्वरके ज्ञानसे अमृतत्व-प्राप्तिका उल्लेख १३१

३ प्रभुकी सर्वशासकताका प्रतिपादन १३२

४ मनुष्यशरीरके रहते-रहते परमेश्वरको न जान लेनेसे बारंबार पुनर्जन्म-प्राप्तिका कथन १३२

५ स्थान-भेदसे भगवान्‌के प्राकट्यमें तारतम्य १३३

६ इन्द्रियोंसे आत्माकी भिन्नता जाननेका फल १३४

७-९ तत्त्व-विचारके वर्णनमें आत्माको बुद्धिसे पर बतलाना और सर्वश्रेष्ठ सबके आश्रय परमेश्वरको जान लेनेपर अमृतत्वकी प्राप्तिका कथन १३५

१०-११ योगके स्वरूप और साधनका प्रकरण १३६

१२-१३ भगवद्विश्वाससे भगवत्प्राप्तिका कथन १३७

१४-१५ निष्कामभावकी एवं संशयरहित निश्चयकी महिमा ... १३८

१६ मरनेके बाद जीवकी गतिका विषय १३९

१७ शरीर और आत्माके भीतर रहनेवाले परमेश्वरकी उन दोनोंसे विलक्षणता और उसके ज्ञानसे मोक्षकी प्राप्तिका निरूपण ... १३९

१८ उपर्युक्त ब्रह्मविद्या और योगविधिके द्वारा नचिकेताको ब्रह्मकी प्राप्ति होनेका कथन १४०

शान्तिपाठ १४१

(४) प्रश्नोपनिषद्

उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ... १४२

(प्रथम प्रश्नोत्तर)

१-३ सुकेशादि ऋषियोंका महर्षि पिप्पलाद गुरुके पास जाना, गुरुकी आज्ञाके अनुसार तप करना और प्रजोत्पत्तिके विषयमें कबन्धीका प्रश्न १४३

४-८ परमेश्वरके संकल्पद्वारा प्राण और रयिके संयोगसे जगत्‌की उत्पत्तिका

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
	वर्णन एवं आदित्य और चन्द्रमामें प्राण और रयि-दृष्टिका कथन	१४५
९-११	प्राण और रयिके सम्बन्धसे परमेश्वरकी उपासनाके प्रकार और उसके फलके निरूपणमें संवत्सरादिमें प्रजापति-दृष्टिका वर्णन तथा सूर्यमें उसके आत्मस्वरूप परमेश्वरको उपास्यदेव बतलाना	१४८
१२	मासादिमें प्रजापति-दृष्टि करके उपासना करनेका प्रकार	१५१
१३	दिन-रातमें प्रजापति परमेश्वरकी दृष्टि करके उपासना करनेका प्रकार तथा दिनमें मैथुनका निषेध	१५२
१४	अन्नको प्रजापतिस्वरूप बताकर उसे प्रजाका कारण बताना	१५२
१५-१६	प्रजापति-व्रतका फल—प्रजाकी उत्पत्ति तथा ब्रह्मचर्य, तप और सत्य-पालनका एवं सब प्रकारके दोषोंसे रहित होनेका फल—ब्रह्मलोककी प्राप्ति	
	(द्वितीय प्रश्नोत्तर)	
१	प्रजाके आधारके विषयमें भार्गवके तीन प्रश्न	१५४
२-४	पिप्पलादद्वारा उत्तरमें शरीरके धारक और प्रकाशक देवोंका तथा उनमें प्राणदेवकी श्रेष्ठताका निरूपण	१५४
५-६	प्राणरूपसे परमेश्वरकी उपासना करनेके लिये सर्वात्मरूपसे उसके महत्त्वका वर्णन	१५६
७-१३	प्राणकी स्तुति	१५७
	(तृतीय प्रश्नोत्तर)	
१	प्राणकी उत्पत्ति आदिके विषयमें आश्वलायनके छः प्रश्न	१६०
२-३	पिप्पलाद मुनिद्वारा दो प्रश्नोंके उत्तरमें—परमात्मासे प्राणकी उत्पत्तिका और संकल्पसे प्राणके शरीरमें प्रवेश करनेका कथन	१६१
४-६	तीसरे प्रश्नके उत्तरमें मुख्य प्राण, अपान, समानके वासस्थान और कार्यका तथा व्यानकी गतिका वर्णन	१६२
७	चौथे प्रश्नके उत्तरमें उदानके स्थान और कार्यका एवं मृत्युके बाद परलोकमें ले जानेका कथन	१६४
८-९	पाँचवें और छठे प्रश्नके उत्तरमें जीवात्माके प्राण और इन्द्रियों-सहित दूसरे शरीरमें जानेका उल्लेख	१६५
१०	चौथे प्रश्नके उत्तरका पुनः स्पष्टीकरण	१६६
११-१२	प्राणविषयक ज्ञानका लौकिक और पारलौकिक फल	१६७
	(चतुर्थ प्रश्नोत्तर)	
१	गार्ग्यमुनिद्वारा जीवात्मा और परमात्माके विषयमें पाँच प्रश्न	१६८

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
२	पिप्पलाद मुनिद्वारा पहले प्रश्नके उत्तरमें सुषुप्तिके समय इन्द्रियोंके शयन (विलीन होने) का स्थान मनको बतलाना ...	१६८
३-४	दूसरे प्रश्नके उत्तरमें सुषुप्तिकालमें पाँच प्राणरूप अग्नियोंके जागते रहनेका कथन तथा मनकी स्थितिका वर्णन ...	१७०
५	तीसरे प्रश्नके उत्तरमें स्वप्नावस्थामें जीवात्माके ही द्वारा घटनाओंके अनुभव करनेका उल्लेख	१७१
६	चौथे प्रश्नके उत्तरमें जीवात्माद्वारा निद्राजनित सुखके अनुभव करनेका उल्लेख	१७२
७-११	पाँचवे प्रश्नके उत्तरमें इन्द्रियादि सम्पूर्ण देवोंके तथा जीवात्माके भी परम आश्रय परमेश्वरका निरूपण और उनकी प्राप्तिसे परम शान्तिका कथन	१७३
	(पञ्चम प्रश्नोत्तर)	
१	ॐकारोपासनाके विषयमें सत्यकामका प्रश्न ...	१७७
२	पिप्पलादका उत्तरमें ॐकारको ही पर और अपर ब्रह्मस्वरूप बताना तथा ॐकारोपासनासे साधकके इच्छानुसार दोनोंमेंसे एककी प्राप्तिरूप फल बतलाना ...	१७७
३	एकमात्रासंयुक्त ॐकारोपासनासे पृथ्वीलोकमें महिमा पानेका उल्लेख	१७८
४	द्विमात्रासंयुक्त ॐकारोपासनासे चन्द्रलोकमें ऐश्वर्य प्राप्तिका उल्लेख	१७८
५-६	त्रिमात्रासंयुक्त ॐकारोपासनासे परम पुरुषके साक्षात्कार होनेका तथा तीनों मात्राओंसहित ॐकारकी उपासनाका रहस्य ...	१७९
७	ॐकारोपासनाका उपसंहार	१८१
	(षष्ठ प्रश्नोत्तर)	
१	सोलह कलावाले पुरुषके विषयमें सुकेशाका प्रश्न ...	१८२
२	पिप्पलादद्वारा उत्तरमें सोलह कलाके समुदायरूप जगत्के उत्पादक परमेश्वरका निरूपण	१८३
३-५	पुरुषोत्तमका तत्त्व समझानेके लिये सृष्टि-क्रम और प्रलयका वर्णन	१८३
६	सर्वाधार परमेश्वरके ज्ञानसे जन्म-मृत्युके अभावका उल्लेख ...	१८६
७	उपदेशका उपसंहार	१८६
८	शिष्योंद्वारा कृतज्ञताप्रकाश और ऋषि-वन्दना ...	१८७
	शान्तिपाठ	१८७

(५) मुण्डकोपनिषद्

मन्त्र विषय

उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ... १८७

प्रथम मुण्डक

(प्रथम खण्ड)

१-२ ब्रह्मविद्याके उपदेशकी परम्परा १८९

३ शौनकका महर्षि अङ्गिराके पास जाना और 'किसके जान लेनेपर सब कुछ जाना हुआ हो जाता है'—यह पूछना ... १९०

४ उत्तरमें अङ्गिराद्वारा परा और अपरा इन दो विद्याओंको जाननेयोग्य बताना १९१

५ संक्षेपमें परा और अपरा विद्याका स्वरूप १९१

६ परा विद्याद्वारा जाननेयोग्य अविनाशी ब्रह्मके स्वरूपका वर्णन ... १९२

७ परमेश्वरसे सम्पूर्ण जगत्की उत्पत्तिमें तीन दृष्टान्त ... १९३

८ संक्षेपमें जगत्की उत्पत्तिका क्रम १९४

९ सर्वज्ञ परमेश्वरके संकल्पमात्रसे जगत्की उत्पत्तिका वर्णन ... १९५

(द्वितीय खण्ड)

१ अपरा विद्याका स्वरूप और फल १९५

२-३ अग्निहोत्रका वर्णन तथा उसके साथ करनेयोग्य कर्म और विधिका उल्लेख १९६

४-६ अग्निकी लपटोंके प्रकारभेद तथा प्रदीप्त अग्निमें नित्य हवनका विधान एवं उसका स्वर्गप्राप्तिरूप फल १९८

७-१० उपर्युक्त स्वर्गके साधनभूत यज्ञादि सकाम कर्मोंको सर्वोपरि माननेवाले पण्डिताभिमानी लोगोंकी निन्दा और उन कर्मोंका फल बारंबार जन्म-मृत्यु होनेका कथन २००

११ सांसारिक भोगोंसे विरक्त मनुष्योंके आचार-व्यवहार और उनके फलका वर्णन २०२

१२ परमेश्वरको जाननेके लिये श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरुके पास जानेका आदेश २०३

१३ गुरुको अधिकारी शिष्यके प्रति तत्त्वविवेचनपूर्वक उपदेश देनेकी प्रेरणा २०४

द्वितीय मुण्डक

(प्रथम खण्ड)

१ अग्निसे चिनगारियोंकी भाँति ब्रह्मसे जगत्की उत्पत्ति और

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
	उसीमें उसके लय होनेका वर्णन ...	२०५
२-३	निराकार परमेश्वरके स्वरूपका वर्णन तथा उससे साकार जगत्के सूक्ष्म तत्त्वोंकी उत्पत्तिका प्रकार	२०६
४-५	भगवान्के विराट्रूपका तथा प्रकारान्तरसे जगत्के उत्पत्ति-क्रमका वर्णन	२०६
६-९	परमेश्वरसे ही फलसहित यज्ञादि साधना, देवादि प्राणी और सदाचार आदि आध्यात्मिक वस्तुओंकी एवं पर्वत, नदी आदि बाह्य जगत्की उत्पत्तिका निरूपण	२०८
१०	परमेश्वरसे उत्पन्न समस्त भावोंको उन्हींका स्वरूप बताकर हृदयरूप गुहामें छिपे हुए उन अन्तर्यामी परमेश्वरको जाननेके फलका वर्णन	२११
	(द्वितीय खण्ड)	
१	'गुहाचर' नामसे प्रसिद्ध परमेश्वरके स्वरूपका वर्णन और उसे जाननेका आदेश	२११
२-४	परब्रह्मके स्वरूपका निर्देश तथा धनुष और बाणके रूपकद्वारा परब्रह्मरूपी लक्ष्यको वेधनेका प्रकार	२१२
५-८	सबके आत्मरूप सर्वज्ञ परमेश्वरको जाननेके लिये अन्य सब बातोंको छोड़कर ध्यान करनेका आदेश तथा परमेश्वरके स्वरूपका वर्णन एवं उसको जाननेके फलका निरूपण ...	२१४
-१०	परब्रह्मके स्थान और स्वरूपका वर्णन, उन्हें जाननेका महत्त्व तथा उन स्वप्रकाश परमेश्वरकी सर्वप्रकाशकता और सर्वव्यापकताका कथन	२१६
	तृतीय मुण्डक	
	(प्रथम खण्ड)	
१-२	एक वृक्षपर रहनेवाले दो पक्षीके रूपकद्वारा जीव और ईश्वरकी भिन्नताका निरूपण तथा ईश्वरकी महिमा जाननेसे जीवके मोहजनित शोककी निवृत्तिका कथन	२१९
३-४	परमेश्वरकी महिमाके दर्शनसे सर्वोत्तम समताकी प्राप्ति तथा उस ज्ञानी भक्तकी निरभिमानता और सर्वश्रेष्ठ स्थितिका वर्णन	२२०
५-६	सत्य, तप, ज्ञान और ब्रह्मचर्यके साधनसे परमात्माकी प्राप्तिका कथन तथा सत्यकी महिमा	२२१
७-८	परमात्माके अचिन्त्य दिव्य स्वरूपका वर्णन तथा चित्तशुद्धि और ध्यानको उनके दर्शनका उपाय बताना ...	२२३

मन्त्र | विषय | पृष्ठ

९ आत्माके स्वरूपका वर्णन और अन्तःकरणकी शुद्धिसे उसमें विशेष शक्तिके प्रकट होनेका कथन … … २२४
१० शुद्ध अन्तःकरणवाले आत्मज्ञानीकी इष्ट भोगों और लोकोंकी प्राप्तिका कथन तथा उस विवेकीका सत्कार करनेके लिये प्रेरणा २२५

(द्वितीय खण्ड)

१–२ निष्कामभावकी प्रशंसा और सकामभावकी निन्दा एवं दोनोंका पृथक्-पृथक् फल … … … २२६
३–४ तर्क, प्रमाद, निर्बलता और गुणहीनता आदिसे भगवत्प्राप्तिकी असम्भवता एवं भगवत्प्राप्तिकी उत्कट अभिलाषावाले निष्काम प्रेमी साधकको भगवत्कृपासे उनके दर्शन होनेका कथन … २२७
५ उपर्युक्त प्रकारसे परमात्माको प्राप्त महात्माओंका महत्त्व … २२८
६ शरीर त्यागकर ब्रह्मलोकमें जानेवाले महापुरुषोंकी मुक्तिका कथन २२९
७–८ जीवन्मुक्त महात्माकी अन्तकालीन स्थिति तथा नदी और समुद्रके दृष्टान्तसे उसकी ब्रह्मलीनताका निरूपण … … २३०
९ 'ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म ही है और उसके कुलमें कोई ब्रह्मको न जाननेवाला नहीं होता' यह कहकर उसकी मोक्षप्राप्तिका कथन … २३१
१०–११ ब्रह्मविद्याके दानकी विधि और उसके अधिकारीका निर्देश तथा उपदेशका उपसंहार एवं ऋषि-वन्दना … … २३१
शान्तिपाठ … … … २३२

(६) माण्डूक्योपनिषद्

शान्तिपाठ … … … २३३
१ भूत, भविष्य, वर्तमान एवं तीनों कालोंसे अतीत, सब भावोंको ॐकारस्वरूप बताना … … … २३४
२ ॐकार और परब्रह्म परमात्माकी एकताका प्रतिपादन करनेके लिये उसके चार चरणोंका निरूपण … … २३५
३ परब्रह्मके पहले चरण स्थूल जगत्-रूप 'वैश्वानर'का वर्णन … २३६
४ परब्रह्मके दूसरे चरण प्रकाशमय हिरण्यगर्भरूप 'तैजस'का वर्णन २३७
५ परब्रह्मके तीसरे चरण विज्ञान आनन्दमय 'प्राज्ञ' का वर्णन २३८
६ उक्त तीन पादोंद्वारा जिसके स्वरूपका लक्ष्य कराया गया है, उसे सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वज्ञ और सबका कारण बतलाना … २४०
७ परब्रह्मके चतुर्थ चरण निर्गुण-निराकार निर्विशेष स्वरूपका वर्णन २४०

Scanned with OKEN Scanner

क्रम	विषय	पृष्ठ
८	नामी—परब्रह्म परमात्माकी उनके नाम—प्रणवकी तीन मात्राओंके साथ तीन पदोंकी एकताका निरूपण	२४१
९	वैश्वानरनामक पहले चरणके साथ पहली मात्रा 'अ'कारकी एकता और उनके ज्ञानसे सम्पूर्ण भोगोंकी प्राप्तिरूप फल ...	२४२
१०	तैजस नामक दूसरे चरण साथ दूसरी मात्रा 'उ'कारकी एकता और उसके ज्ञाने ज्ञानपरम्पराके उत्कर्ष और स्वभावकी प्राप्तिरूप फल	२४३
११	प्राज्ञनामक तीसरे चरणके साथ तीसरी मात्रा 'म'कारकी एकता और उसके ज्ञानसे सम्पूर्ण जगत्का ज्ञान तथा सर्वत्र परब्रह्म-दृष्टिरूप फल	२४४
१२	मात्रारहित ॐकारकी परमेश्वरके चौथे चरण—निर्विशेष रूपके साथ एकता और उसके ज्ञानमें परब्रह्मकी प्राप्तिरूप फल ...	२४४
	शान्तिपाठ	२४५

(७) ऐतरेयोपनिषद्

उपनिषद्के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ... २४६

प्रथम अध्याय

(प्रथम खण्ड)

१ परमात्माके सृष्टिरचनाविषयक प्रथम संकल्पका वर्णन ... २४७

२-४ परमात्माके द्वारा समस्त लोकोंकी और ब्रह्मा तथा अन्य लोकपालोंकी एवं वागादि इन्द्रियों और उनके अधिष्ठातृ-देवताओंकी उत्पत्तिका निरूपण २४८

(द्वितीय खण्ड)

१ इन्द्रियों और उनके अधिष्ठाता देवताओंद्वारा वासस्थान और अन्नकी याचना २५१

२ परमात्माद्वारा गौ तथा अश्व-शरीरकी रचना और देवताओंका उनको पसंद न करना २५२

३-४ परमात्माद्वारा मनुष्य-शरीरकी रचना, उसे देखकर देवताओंका प्रसन्न होना और उसके भीतर अपने-अपने स्थानोंमें प्रवेश करना २५२

५ देवताओंके अन्नमें क्षुधा और पिपासाको भी भाग-प्रदान ... २५४

(तृतीय खण्ड)

१-२ परमात्माद्वारा अन्नरचनाका विचार और अन्नकी सृष्टि ... २५५

मन्त्र विषय पृष्ठ

१-९ अन्नका भाग जाना तथा पुरुषका उसे वाणी, प्राण, नेत्र, कान, त्वचा, मन और उपस्थके द्वारा पकड़नेका उद्योग एवं पकड़नेमें असफल होना २५५

१० अन्तमें अपानके द्वारा अन्नको पकड़ लेनेके कारणके अपानकी महत्ताका उल्लेख २५८

११ परमात्माका मनुष्य-शरीरमें प्रवेश करनेका विचार ... २५९

१२ परमात्माका 'विदृति' नामक मूर्द्धद्वारसे शरीरमें प्रवेश करना तथा उनके तीन स्थानों और तीन स्वप्नोंका निरूपण ... २६०

१३ मनुष्यका सृष्टि-रचना देखकर आश्चर्ययुक्त होना और उसके बाद परमेश्वरके साक्षात्कारसे इसी शरीरमें उसके कृतकृत्य हो जानेका कथन २६१

४ परमेश्वरके 'इन्द्र' नामकी व्युत्पत्ति २६२

द्वितीय अध्याय

(प्रथम खण्ड)

१-२ पुरुषद्वारा माताके शरीरमें गर्भप्रवेशरूप उसका प्रथम जन्म तथा माताके द्वारा गर्भके पालन-पोषणका वर्णन ... २६३

३-४ माताके गर्भसे बाहर बालकरूपमें प्रकट होनारूप उसका दूसरा जन्म तथा पिता-पुत्रके सम्बन्ध और कर्तव्यका संकेत ... २६४

पिताद्वारा पुत्रपर वैदिक और लौकिक शुभ कर्मोंका भार देकर ऋण होनेका और मरनेके बाद अन्य योनिमें उत्पन्न होनारूप उसके तृतीय जन्मका कथन तथा इस

५-६ प्रकरणका भावार्थ—जन्म-मृत्युसे छूटनेके लिये प्रेरणा ... २६५

वामदेव ऋषिको गर्भमें ही ज्ञान होनेका उल्लेख तथा देहत्यागके पश्चात् उनको परमधाम प्राप्त होनेका निरूपण ... २६६

तृतीय अध्याय

(प्रथम खण्ड)

१ पूर्वोक्त परमात्मा और जीवात्मा इन दोनोंमेंसे उपास्यदेव कौन है ? और किसके सहयोगसे मनुष्य रूप आदि विषयोंका अनुभव करता है ? इसके निर्णयार्थ ऋषियोंका विचार ... २६८

२ 'मनकी देखना, सुनना, मनन करना आदि शक्तियाँ ज्ञानरूप

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
	परमात्माके ही नाम हैं—इस तथ्यके अनुशीलनसे परमात्माकी सत्ताके ज्ञान होनेका कथन	२६९
३	समस्त जगत्‌के रचयिता, संचालक, रक्षक और आधारभूत प्रज्ञानस्वरूप परमात्मा ही उपास्यदेव हैं—इस प्रकार ऋषियोंका निश्चय करना	२६९
४	उस प्रज्ञानस्वरूप परमेश्वरके ज्ञानसे शरीर-त्यागके अनन्तर परम धाममें जाकर अमर हो जानेका निरूपण	२७१
	शान्तिपाठ	२७१

(८) तैत्तिरीयोपनिषद्

उपनिषद्‌के सम्बन्धमें प्राक्कथन तथा शान्तिपाठ ... २७२

शीक्षावल्ली

अनुवाक		
१	आचार्यद्वारा विभिन्न शक्तियोंके अधिष्ठातृ-देवताओंके नामसे परमेश्वरकी स्तुति-प्रार्थना करके उनकी वायुनामसे स्तुति और वन्दना	२७२
२	वेदमन्त्रोंके उच्चारणके नियमोंको कहनेकी प्रतिज्ञा करके उनका संक्षेपमें वर्णन	२७४
३	लोक, ज्योति, विद्या, प्रजा और शरीरविषयक पाँच प्रकारकी संहितोपासनाके प्रकरणमें अभीष्ट लोकप्राप्तिके उपायका, ज्योतियोंके संयोगसे भौतिक पदार्थोंकी उन्नतिके रहस्यका, विद्याप्राप्तिके रहस्यका, संतानप्राप्तिके उपायका एवं वाणीद्वारा प्रार्थनासे शरीरकी उन्नति और नामजपसे भगवत्प्राप्तिके उपायका तथा इन पाँचोंके ज्ञानसे पृथक्-पृथक् फल पानेका कथन ...	२७६
४	साधनमें सहायक बौद्धिक और शारीरिक बलके लिये परमेश्वरसे ॐकारद्वारा प्रार्थना करनेका प्रकार तथा ऐश्वर्य-प्राप्ति आदिके लिये किये जानेवाले हवनके मन्त्रोंका उल्लेख ...	२८१
५	लोकों, ज्योतियों, वेदों और प्राणोंके विषयमें भूः भुवः स्वः महः—इन चार महाव्याहृतियोंके प्रयोगद्वारा उपासना करनेकी विधि और उनका पृथक्-पृथक् फल	२८५
६	परमेश्वरके हृदयाकाशमें रहनेका वर्णन तथा उन्हें प्रत्यक्ष देखनेवाले महापुरुषका क्रमशः भूः भुवः स्वः महःरूप लोकोंमें जाने और वहाँ स्वराट् बनकर प्रकृतिपर अधिकार प्राप्त कर लेनेका	

निरूपण एवं उन परब्रह्मका स्वरूप बतलाकर उनकी उपासनाके लिये आदेश २८९
७ लौकिक और पारलौकिक उन्नतिके लिये पाङ्क्तरूपसे वर्णित भौतिक और आध्यात्मिक पदार्थोंके सम्बन्ध और उपयोगका निरूपण ... २९२
८ ॐकारकी महिमाका वर्णन २९४
९ अध्ययनाध्यापन करनेवालोंके लिये ऋत आदि शास्त्रोक्त सदाचार-के पालनकी अवश्यकर्तव्यताका विधान २९५
१० त्रिशङ्कु ऋषिके स्वानुभवके उद्गार बतलाकर भावनाशक्तिकी महिमाका दिग्दर्शन कराना २९७
११ आचार्यद्वारा स्नातकको गृहस्थधर्मपालनकी महत्त्वपूर्ण शिक्षा ... २९८
१२ उपदेशकी समाप्तिमें पुनः विभिन्न शक्तियोंके अधिष्ठातृ-देवताओं-के नामसे परमेश्वरकी स्तुति-प्रार्थना करके उनकी वायुनामसे स्तुति और वन्दना ३०३

ब्रह्मानन्दवल्ली

शान्तिपाठ ३०५
१ हृदयगुहामें छिपे हुए परमेश्वरको जाननेका फल, मनुष्यशरीरकी उत्पत्तिका प्रकार और पक्षीके रूपमें उसके अङ्गोंकी कल्पना ... ३०५
२ अन्नकी महिमा तथा प्राणमय शरीर और उसके अन्तरात्माका वर्णन ३०८
३ प्राणकी महिमा तथा मनोमय शरीर और उसके अन्तरात्माका वर्णन ३१०
४ मनोमय शरीरकी महिमा तथा विज्ञानमय जीवात्माके स्वरूपका वर्णन ३१३
५ विज्ञानात्माकी महिमा और उससे भिन्न उसके अन्तरात्मा आनन्दमय परमपुरुषका वर्णन ३१५
६ परब्रह्मकी सत्ता मानने और न माननेका परिणाम, ब्रह्मकी सत्ताके विषयमें अनुप्रश्न और उसके उत्तरमें ब्रह्मके स्वरूप और शक्तिका वर्णन करते हुए सृष्टिकी उत्पत्तिका क्रम-निरूपण ... ३१७
७ स्वयं जगत्‌रूपमें बननेवाले परमात्माकी सुकृतता तथा सबके जीवन और चेष्टाके आधारभूत उन परमात्माकी रसमयता एवं परमात्मप्राप्त पुरुषको निर्भयपद-प्राप्ति और उन परमात्मासे विमुख पुरुषको जन्म-मरणरूप भयकी प्राप्तिका उल्लेख ३२१
८ परमात्माकी शासनशक्तिकी महिमामें एवं आनन्दकी मीमांसामें मानव-आनन्द-जीवनकी अपेक्षा क्रमशः देवादि लोकोंके आनन्दकी उत्तरोत्तर

अनुवाक | विषय | पृष्ठ

अधिकता तथा निष्काम विरक्तके लिये उस आनन्दकी स्वभावसिद्धता और परमात्माके आनन्दकी निरतिशयता एवं उन आनन्दकेन्द्र सर्वान्तर्यामी परमेश्वरके ज्ञानसे उनकी प्राप्तिका निरूपण ... ३२४

९ आनन्दमय परमात्माके ज्ञाताको निर्भयताकी प्राप्ति तथा पुण्य और पाप दोनों कर्मोंके प्रति रागद्वेषरहित उस महापुरुषकी शोकरहित स्थितिका परिचय ३३१

भृगुवल्ली

१ भृगुका अपने पिता वरुणके पास जाकर ब्रह्मोपदेशके लिये प्रार्थना तथा वरुणद्वारा अन्न, प्राण, मन आदिको ब्रह्मप्राप्तिका द्वार बतलाकर 'सब कुछ ब्रह्म ही है' इस तत्त्वका उपदेश एवं भृगुका तप करना ... ३३३

२ 'अन्न ही ब्रह्म है' ऐसा निश्चयकर भृगुका पुनः पिताके पास जाना और उनके उपदेशसे पुनः तप करना ३३४

३ 'प्राण ही ब्रह्म है' ऐसा निश्चयकर भृगुका पुनः पिताके पास जाना और उनके उपदेशसे पुनः तप करना ३३५

४ 'मन ही ब्रह्म है' ऐसा निश्चयकर भृगुका पुनः पिताके पास जाना और उनके उपदेशसे पुनः तप करना ३३७

५ 'विज्ञानस्वरूप चेतन जीवात्मा ही ब्रह्म है' ऐसा निश्चयकर भृगुका पुनः पिताके पास जाना और उनके उपदेशसे पुनः तप करना ... ३३८

६ भृगुका 'आनन्दमय परमात्मा ही ब्रह्म है' ऐसा निश्चय करना तथा इस भार्गवी वारुणी विद्याका महत्त्व और फल ... ३३९

७ अन्नकी निन्दा न करनारूप व्रतका निरूपण तथा प्राणको अन्न और शरीरको अन्नका भोक्ता कहकर उसके विज्ञानका फल बताना ... ३४१

८ अन्नका दुरुपयोग न करनारूप व्रतका निरूपण तथा जलको अन्न और ज्योतिको अन्नका भोक्ता कहकर उसके विज्ञानका फल बताना ३४३

९ अन्नकी वृद्धि करनारूप ब्रह्मका निरूपण तथा पृथ्वीको अन्न और आकाशको अन्नका भोक्ता कहकर उसके विज्ञानका फल बताना ... ३४४

१० अतिथि-सेवाका महत्त्व और उसका श्रेष्ठ फल, वाणी आदि मानुषी और वर्षा आदि दैवी विभूतियोंके रूपमें परमात्माके सर्वत्र चिन्तनका प्रकार तथा विविध कामनाओंके भावसे की जानेवाली उपासनाका फलसहित निरूपण एवं परमात्माको सर्वत्र परिपूर्ण समझकर प्राप्त करनेका फल और भगवत्प्राप्त पुरुषकी स्थिति तथा उस महापुरुषके

अनुवाक विषय पृष्ठ

आनन्दमय मनसे निकले हुए समता और सर्वरूपताविषयक उद्गारों (सामगान) का वर्णन ३४१

शान्तिपाठ ३५३

(६) श्वेताश्वतरोपनिषद्

शान्तिपाठ ३५४

प्रथम अध्याय

मन्त्र

१ जगत्‌के कारणकी, जीवनहेतुकी, स्थितिके कारणकी और सबके आधारकी खोज करनेवाले कुछ जिज्ञासुओंका परस्पर विचार-विमर्श ३५४

२ काल, स्वभाव, प्रारब्ध आदिकी जगत्कारणताका खण्डन ... ३५५

३ ऋषियोंद्वारा ध्यानयोगसे जगत्‌के वास्तविक कारण परमेश्वरकी अचिन्त्य आत्म-शक्तिके साक्षात्कारका कथन ... ३५६

४–५ विश्वका चक्र और नदीके रूपमें वर्णन ३५७

६–७ परमात्माद्वारा जीवात्माके कर्मानुसार संसार-चक्रमें घुमाये जाने-का तथा अपनेको और सर्वप्रेरक परमात्माको पृथक्-पृथक् समझने और उनकी कृपाका अनुभव करनेसे अमृतत्व पाकर ब्रह्ममें लीन होनेका निरूपण ३६०

८ परमात्माका स्वरूप न जाननेसे जीवात्माके बन्धन होने और जाननेसे मोक्ष होनेका वर्णन ३६१

९–११ जीवात्मा, प्रकृति और इन दोनोंके शासक परमात्माके स्वरूप-का प्रतिपादन तथा तीनोंके तत्त्वको जानकर परमात्माका निरन्तर ध्यान करनेसे कैवल्यपदकी प्राप्तिका उल्लेख ... ३६२

१२ जानने योग्य प्रेरक परमात्मा, भोक्ता जीव और भोग्य जड़वर्गकी जान लेनेसे सब कुछ जान लेनेका कथन ३६४

१३–१४ ॐकारकी उपासनाद्वारा जीवात्मा और परमात्माके स्वरूपकी उपलब्धिका निरूपण एवं अरणि-मन्थनके दृष्टान्तद्वारा वाणीसे नाम-जप और मनसे स्वरूप-चिन्तन करके परब्रह्मका साक्षात्कार करनेका आदेश ३६५

१५–१६ तिलोंमें तेल, दहीमें घी आदिकी भाँति हृदय-गुहामें छिपे हुए और सर्वत्र परिपूर्ण परमात्माको सत्य और तपके द्वारा प्राप्त करनेके लिये प्रेरणा ३६६

मन्त्र विषय पृष्ठ

द्वितीय अध्याय

१–५ प्रथमाध्यायमें वर्णित ध्यानकी सिद्धिके लिये परमेश्वरसे स्तुति-प्रार्थना करनेका निरूपण ३६७

६–७ ध्यान-साधनसे मनके विशुद्ध होनेका कथन एवं साधकको परमात्माकी शरण लेनेकी प्रेरणा ३७०

८ ध्यान-योगकी विधि और बैठनेका प्रकारवर्णन ... ३७१

९ प्राणायामका क्रम और उसकी महत्ता ३७२

१० ध्यानके लिये उपयुक्त स्थान और भूमिका वर्णन ... ३७२

११ योगसाधनकी उन्नतिके द्योतक लक्षणोंका दिग्दर्शन ... ३७३

१२–१३ योगसाधनसे भूतसम्बन्धी पाँच सिद्धियोंके तथा लघुता, नीरोगता प्रभृति अन्य सिद्धियोंके भी प्राकट्यका निरूपण ... ३७४

१४–१५ योगसाधन करके आत्मतत्त्वसे ब्रह्मतत्त्वका जाननेका फल, कृत-कृत्यता और समस्त बन्धनोंसे मुक्तिकी प्राप्ति ... ३७५

१६-१७ सर्वस्वरूप और सर्वत्र परिपूर्ण परमदेव परमात्माकी जीवोंके भीतर अन्तर्यामीरूपसे स्थिति बताकर उन्हें नमस्कार करना ... ३७६

तृतीय अध्याय

१–२ समस्त जगत्‌की उत्पत्ति, स्थिति, संचालन और विलयन करने-वाले परमेश्वरके ज्ञानसे अमृतत्व-प्राप्तिका कथन ... ३७८

३ परमेश्वरके नेत्र, मुख, हाथ और पैरोंकी सर्वत्र विद्यमानता और भक्तके द्वारा उनकी अनुभूतिका प्रकार-निरूपण एवं परमेश्वर-द्वारा ही सबको शक्ति दिये जानेका उल्लेख ... ३७९

४–६ रुद्ररूप सर्वकारण सर्वज्ञ परमेश्वरसे शुभ बुद्धि और कल्याण-दानके लिये प्रार्थना ३८०

७–८ सर्वश्रेष्ठ सर्वव्यापी महान् परमेश्वरके ज्ञानसे जन्म-मरणनाश तथा उस ज्ञानी महापुरुषके अनुभव और परमात्मज्ञानके फलकी दृढ़ताका प्रतिपादन ३८१

९–१० परमेश्वरकी सर्वश्रेष्ठता, महत्ता और सर्वत्र परिपूर्णताका तथा उन परमात्माके ज्ञानद्वारा दुःखोंसे छूटनेका कथन ... ३८२

११–१७ सर्वव्यापी, सर्वप्रेरक, सर्वरूप, सर्वत्र हाथ, पैर आदि समस्त इन्द्रियोंसे युक्त, सब इन्द्रियोंसे रहित, सबके स्वामी और एकमात्र शरण्य भगवान्‌के सविशेष और निर्विशेष स्वरूपके तात्त्विक

Scanned with OKEN Scanner

वर्णनमें उन परमात्माको अङ्गुष्ठमात्र परिमाणवाला बताकर उनके ज्ञानसे अमृतस्वरूप हो जानेका निरूपण करना ... ३८३
१८ नौ द्वारवाले पुरमें अन्तर्यामीरूपसे परमेश्वरकी स्थितिका वर्णन ३८६
१९ 'वे सर्वज्ञ परमात्मा समस्त इन्द्रियोंसे रहित होकर भी सब इन्द्रियोंका कार्य करनेमें समर्थ हैं' इसका स्पष्टीकरण और उनकी महिमाका वर्णन ३८७
२० परमेश्वरको अणुसे भी अणु और महान्‌से भी महान् बताना और उनकी कृपासे ही उनकी महिमाके ज्ञान होनेका निरूपण करना ३८८
२१ परमात्माको प्राप्त महात्माका स्वानुभव-वर्णन ... ३८८

चतुर्थ अध्याय

१ शुभ बुद्धिके लिये परमेश्वरसे अभ्यर्थना ३८९
२–४ परमेश्वरका जगत्‌के रूपमें चिन्तन करते हुए उनकी स्तुतिका प्रकार तथा अव्यक्त और जीवरूप दोनों प्रकृतियोंपर परमेश्वरके स्वामित्वका निरूपण ३८९
५ उक्त दोनों अनादि प्रकृतियोंका स्पष्टीकरण ३९१
६–७ एक वृक्षपर रहनेवाले दो पक्षीके रूपकद्वारा जीवात्मा और परमेश्वरकी भिन्नताका प्रतिपादन तथा परमेश्वरकी महिमाके ज्ञानसे जीवके मोहजनित शोककी निवृत्तिका कथन ... ३९२
८ दिव्य परमधाम और भगवान्‌के पार्षदोंका तत्त्व न जाननेवालेको वेद-शास्त्रोंसे कोई लाभ न होना तथा जाननेवालोंका परमधाममें निवास ३९४
९ परमेश्वरके रचे हुए इस जगत्‌में ज्ञानी पुरुषोंसे भिन्न अज्ञानी जीवोंके बन्धनका उल्लेख ३९५
१० माया और मायापति परमेश्वरको जाननेकी प्रेरणा ... ३९५
११ समस्त कारणोंके अधिष्ठाता स्तवनीय परमेश्वरको जान लेनेसे शान्ति प्राप्त होनेका कथन ३९६
१२ सद्‌बुद्धिके लिये उन सर्वकारण सर्वज्ञ परमेश्वरसे पुनः प्रार्थना ... ३९६
१३ समस्त देवोंके अधिपति सबके आश्रयभूत परमेश्वरको भेंट-पूजा समर्पण करनेका समर्थन ३९७

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
१४–२०	अत्यन्त सूक्ष्म, सृष्टिकी रचना और रक्षा करनेवाले, सब मनुष्योंके हृदयमें विद्यमान, सर्वव्यापक, कल्याणमय, महान् यशस्वी और दिव्य चक्षुओंसे देखे जाने योग्य परमदेव परमात्माके स्वरूपका उनकी प्राप्तिरूप फलसहित विस्तृत वर्णन ...	३९८
२१–२२	रुद्ररूप परमेश्वरसे मुक्तिके लिये तथा सांसारिक भयसे रक्षाके लिये प्रार्थना	४०२

पञ्चम अध्याय

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
१	विद्या और अविद्याकी परिभाषा एवं इन दोनोंपर शासन करनेवाले परमेश्वरकी विलक्षणता	४०३
२–४	उपास्यदेव भगवान्के आदिकारणता, सर्वाधिपतित्व, सर्वप्रकाशकता, स्वयंप्रकाशमानता प्रभृति गुणगणोंका एवं उनकी अतर्क्य लीलाके रहस्यका निरूपण	४०४
५	विश्वके शासक परमात्माद्वारा सब पदार्थोंके नाना रूपोंमें परिवर्तन और जीवोंके साथ गुणोंका यथायोग्य सम्बन्ध किये जानेका कथन	४०६
६	वेदोंकी रहस्यभूत उपनिषद्-विद्याको जाननेवाले ब्रह्मा तथा देवता और ऋषिगणोंके अमृतरूप हो जानेका उल्लेख ...	४०७
७	जीवात्माकी स्वकर्मानुसार देवयान, पितृयान और नाना योनियोंमें जन्म-मृत्युके चक्रमें घूमनारूप तीन गतियोंका प्रकरण ...	४०७
८–१०	जीवात्माके स्वरूपका विवेचन	४०८
११	मनुष्ययोनिमें अथवा विभिन्न योनिमें पृथक्-पृथक् संकल्प, स्पर्श, दृष्टि, मोह, भोजन, जलपान और वृष्टिसे सजीव शरीरकी वृद्धि और जन्म होनेका उल्लेख	४१०
१२	जीवके आवागमनका कारण	४११
१३	अनादिकालसे चले आते हुए जन्म-मरणरूप बन्धनसे छूटनेका उपाय	४१२
१४	अध्यायके उपसंहारमें परमात्माकी प्राप्तिके उपायका संकेत ...	४१३

षष्ठ अध्याय

मन्त्र	विषय	पृष्ठ
१	पुनः स्वभाव और कालकी जगत्कारणताका खण्डन तथा परमेश्वरकी महिमासे सृष्टिचक्रके संचालनका समर्थन ...	४१४
२	उन सर्वव्यापी, सर्वज्ञ ...	

Scanned with OKEN Scanner

३ परमात्माके द्वारा जीवात्माका गुण आदिके साथ सम्बन्ध कराये जानेका वर्णन ४१४
४ भगवदर्पणरूप कर्मयोगके अनुष्ठानसे कर्मबन्धनके नाशका कथन ४१५
५ भगवत्प्राप्तिके लिये उपासनारूप दूसरे साधनका वर्णन ... ४१६
६ ज्ञानयोगरूप तीसरे साधनका फलसहित निरूपण ... ४१७
७ प्रथम अध्यायमें कथित ध्यानके द्वारा परमेश्वरका साक्षात्कार करनेवाले महात्मा पुरुषोंके मुखसे जगत्के सर्वश्रेष्ठ कारणरूप परमात्माकी महिमाका कथन ४१८
८–९ परमेश्वरकी असीम ज्ञान, बल और क्रियारूप स्वाभाविक विविध शक्तियोंका वर्णन तथा उनकी अतुलनीय महत्ताका प्रतिपादन ... ४१९
१० जगत्के अभिन्न निमित्तोपादान-स्वरूप परमात्माकी स्तुति करते हुए उनसे अपने ब्रह्मस्वरूपमें आश्रय देनेके लिये प्रार्थना ... ४२०
११–१३ परब्रह्म परमात्माके सर्वव्यापी, अन्तर्यामी, साक्षी, चेतन एवं कारणस्वरूपका निरूपण एवं उनको जाननेवाले महापुरुषोंके लिये मोक्षकी प्राप्तिका प्रतिपादन ४२०
१४ सूर्य-चन्द्रादि ज्योतियोंकी परब्रह्मको प्रकाशित करनेमें असमर्थताका तथा परमात्माके प्रकाशसे ही सबको प्रकाश प्राप्त होनेका उल्लेख ४२२
१५–१७ परमधामकी प्राप्तिके लिये अखिल कल्याणमय दिव्य गुणसम्पन्न सर्वेश्वरके स्वरूपका विशेषतासे वर्णन ४२३
१८ परमदेव पुरुषोत्तमको जानने और पानेके लिये उनकी शरण लेनेका प्रकार ४२५
१९ निर्गुण निराकार परमात्माके स्वरूपका निर्देश ... ४२६
२० परमात्मज्ञानके बिना दुःख-निवृत्तिकी असम्भवता ... ४२७
२१ श्वेताश्वतर ऋषिको तपसे और भगवत्कृपासे ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने तथा उसके द्वारा अधिकारियोंको उपदेश दिये जानेका कथन ... ४२७
२२ अशान्तचित्त अनधिकारीके प्रति उपदेश देनेका निषेध ... ४२८
२३ परमेश्वर और गुरुमें श्रद्धा-भक्ति रखनेवालेको दिये हुए उपदेशकी सफलताका कथन ४२८
शान्तिपाठ ४२९

मिलनेका पता
गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

Scanned with OKEN Scanner